DOI-10.53571/NJESR.2022.4.7.25-32

"भारत में हिंदी पत्रकारिता"

दिव्या कुमारी ,एम0 ए0- हिन्दी , नेट (**यू0 जी0 सी0**),**दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली**,

डॉ. अरुण कुमार , अध्यक्ष , हिंदी-विभाग, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (**उ.प्र.**) **मो. नं.**- 8923233108. **Email** - **arunkhindi@gmail.com**

राजू , राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (**उ.प्र.**) **मो. नं.**-8979461838

Email - **rajphysics84@gmail.com**

(Received 20 June 2022/Revised: 10 July 2022/Accepted: 15 July 2022/ Published: 20 July 2022)

सारांश :

जनसेवा का माध्यम पत्रकारिता है। इससे मानव जीवन की विविधताएँ तथा नित्य घटित होने वाली घटनाएँ शीघ्र अतिशीघ्र विश्वभर में पहुँचती हैं। विश्व के समाचारों और घटनाओं को संकलित करना, उनका विवेचन करना, खबरों का विवरण इकट्ठा करना, उन्हें पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से जनता तक पहुँचाना पत्रकारिता का उद्देश्य रहा है। पत्रकारिता की शक्ति से समाज की कमियों , गलतियों और कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। विचारों को जनता तक पहुचाने का साधन पत्रकारिता है। दुनिया के सभी विषय पत्रकारिता की परिधि में आते हैं। पहले पहल पत्रकारिता का उद्देश सरकारी तथ्यों की जानकारी जनता को देकर उनकी प्रतिक्रिया जानना था फिर पत्रकारिता का विकास होने पर उसके विषय विस्तृत बने।

आज पत्रकारिता पाठकों को शिक्षा देने के साथ मनोरंजन का काम भी कर रही है ।आज इंटरनेट और सूचना अधिकार ने पत्रकारिता को बहु–आयामी और अनंत बना दिया है। अब कोई भी जानकारी पलक झपकते ही प्राप्त की जा सकती है। पत्रकारिता वर्तमान समय मे पहले से अधिक सशक्त, स्वतंत्र और प्रभावकारी बन गई है। अभिव्यक्ति की आजादी और पत्रकारिता की पहुंच का उपयोग सामाजिक सरोकारों और समाज के भले के लिए हो रहा है । पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ भी कहा जाता है। इसने लोकतंत्र में यह महत्वपूर्ण स्थान अपने आप हासिल नहीं किया है बल्कि सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति पत्रकारिता के दायित्वों के महत्व को देखते हुए समाज ने ही यह दर्जा इसे दिया है। लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब पत्रकारिता सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति अपनी सार्थक भूमिका का पालन करे। पत्रकारिता का उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निर्वाह करे ।

मुख्यशब्द :- पत्रकारिता, जर्नलिज्म, दैनिकी, दैनंदिनी, रोजनामचा, समाचार पत्र, मैगज़ीन आदि।

प्रस्तावना :

पत्रकारिता का जन्म और विकास बेहद रोचक रहा है। हमारे दैनिक जीवन में ऐसा कोई अंश नही है । जो बिलकुल पत्रकारिता से अछूता हो । ब्रिटेन, फ़्रांस, होलेन्ड, जर्मनी जैसे कई देशों में पत्रकारिता के विकास से समूचे विश्व की जर्नलिज्म प्रभावित हुई है ।दुनिया में पत्रकारिता का उद्भव सहज जिज्ञासा और खोज की प्रवृति का नतीजा है । अपनी निष्पक्षता तथा निर्भीकता के कारण ही पत्रकारिता लोकतंत्र के सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर जनता के सामने उपस्थित हुई है । भारत में स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान पत्रकारिता का योगदान अविस्मरणीय था । स्वतंत्रता के पूर्व हिंदी पत्रकारिता जिन उद्देश्यों और लक्ष्यों के लिए समर्पित थी वह अब बदल गए। पहले पत्रकारिता का मूल लक्ष्य था देश की आज़ादी, मगर स्वतन्त्र भारत में पत्रकारिता का लक्ष्य हो गया देश के आर्थिक , सामाजिक विकास में जन-जन की सक्रीय- भागीदारी को प्रोत्साहन देना। राष्ट्र ने लोकतांत्रिक शासन पद्यति को स्वीकार किया। यह पद्यति तभी सफल हो सकती है जब आम जन इस शासन पद्यति से सीधे जुड़े। इस प्रकार सत्ता और जनता के मध्य एक कड़ी के रूप में कार्य करने का भी दायित्व पत्रकारिता के कंधों पर आ गया है ।

अध्ययन का उद्देश्य :

हिंदी पत्रकारिता ने न केवल भारतीय स्वतंत्रता से पूर्व बल्कि स्वतन्त्रता के बाद भी भारत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे देश की स्थिति को सुधारने और आम आदमी तक सूचना का प्रसारण करने का सबसे नया, विश्वसनीय और अनूठा माध्यम पत्रकारिता ही है। इस शोध पत्र के माध्यम से "**भारत में हिंदी पत्रकारिता**" विषय पर समसामयिक विश्लेषण किया जाएगा । आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बदलते परिवेश के अनुकूल हिंदी पत्रकारिता के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसकी वर्तमान उपयोगिता एवम महत्व के विषय में आवश्यक तथ्यों का उद्घाटन किया जाएगा।

सिंहावलोकन :

हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत के पीछे कला और साहित्य की सेवा तथा धर्म का प्रचार था लेकिन वस्तुस्थिति से पता लगता है कि हिंदी पत्रकारिता के पीछे युग चेतना, राष्ट्रीय चेतना व स्वाधीनता की भावना सबसे प्रबल थी । इसके बाद ही साहित्य का विकास , कला और संस्कृति में लोगों की रुचि पैदा करने की बात आती है। इसका सबसे बड़ा कारण दिखाई देता है कि साहित्य, संस्कृति, कला,

धर्म आदि के प्रचार प्रसार , विकास आदि की परम्परा तो भारत में काफी पहले से रही, लेकिन सामाजिक विडम्बनाओं, शासकों के शोषण, दुनिया के बदलते परिवेश, विज्ञान की प्रगति, शिक्षा के नए मानदंड, भाषा के बदलते स्वरूप, स्वाधीनता का एहसास जगाने की बात, देश भक्ति की चेतना फैलाने की बात आदि के लिए कोई सुसम्बद्ध माध्यम नहीं था। सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को बताना तथा सत्ता पक्ष के3 शोषण तथा आम आदमी की हालत लोगों तक पहुचाने का सबसे नया, विश्वसनीय और अनूठा माध्यम पत्रकारिता ही थी। इसलिए पत्रकारिता बिल्कुल नए माध्यम के रूप में सर्वथा नई ऊर्जा के साथ शुरू की गई और इसकी मुख्य भूमिका सामाजिक और राजनीतिक ही रही।चूँकि यह आधुनिक , वैज्ञानिक आई नई विधा, एक पराधीन भारत में आई थी इसलिए इसे एक राजनीतिक हथियार के रुप में इस्तेमाल किया गया और देश की मुक्ति की लड़ाई का एक हथियार होने के कारण यह विधा एक मिशन के रूप में परिवर्तित हो गई।

पत्रकारिता : अर्थ व परिभाषा

पत्रकारिता शब्द का जन्म संस्कृत भाषा के 'पत्र' शब्द मे 'कृ' धातु , जिन-तल+टाप प्रत्ययों के योग से हुआ है। जिसका आशय होता है- पत्र पत्रिकाओं के लिए समाचार और लेख आदि लिखना। पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के 'जर्नलिज्म' शब्द 'जर्नल' से निर्मित है और इसका अर्थ है 'दैनिकी', 'दैनंदिनी', 'रोजनामचा' अथार्त जिसमें दैनिक कार्यो का विवरण हो, आज जर्नल शब्द **'मैगज़ीन'**, **'समाचार पत्र'**, दैनिक अखबार का द्योतक हो गया है। 'जर्नलिज्म' यानी पत्रकारिता का अर्थ समाचार पत्र , पत्रिका से जुड़ा व्यवसाय , समाचार संकलन, लेखन, सम्पादन , प्रस्तुतीकरण, वितरण आदि होगा। आज के युग में पत्रकारिता के अभी अनेक माध्यम हो गए हैं, जैसे अखबार, पत्रिकायें, रेडियो, दूरदर्शन, वेब-पत्रकारिता, सोशल मीडिया, इंटरनेट आदि। विभिन्न मनीषियों द्वारा पत्रकारिता को अलग-अलग शब्दों में परिभाषित किया गया है:-

हिंदी शब्द सागर के अनुसार "पत्रकार का काम या व्यवसाय ही पत्रकारिता "1

डॉ बद्रीनाथ कपूर के अनुसार "पत्रकारिता पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार लेख आदि एकत्रित करने, सम्पादित करने, प्रकाशन आदेश देंने का कार्य है।"2

डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र के अनुसार, "पत्रकारिता वह विधा है जिसमे पत्रकारो के कार्य, कर्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है । जो अपने युग और अपने सम्बन्ध में लिखा जाए, वही पत्रकारिता है।" 3

डॉ रामचन्द्र तिवारी की मान्यता है कि, " ज्ञान तथा विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों एवम चित्रों सहित विशाल जनमानस तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।"**4**

आज़ादी से पहले हिंदी पत्रकारिता:

"खींचो न कमान न तलवार निकालो ।

जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो ।।" 5(अकबर इलाहाबादी)

हिंदी पत्रकारिता तत्कालीन बरतानी हुकूमत की फासीवादी और साम्राज्यवादी नीतियों के विरोध की ही उपज है , भारतीय जनता पर उनकी जकड़बंदी, कुंठा, संत्रास, निराशा, बेबसी की अभिव्यक्ति की छटपटाहट है । राष्ट्रीय जनजागरण , समाज सुधार अपने हक की लड़ाई का बयान है, कुल मिलाकर समकालीन विडम्बनाओं विभिन्न जटिलताओं, वर्जनाओं, त्रासद प्रतिक्रियाओ का मुकम्मल ब्यौरा है । स्वतन्त्रता आंदोलन के दौर में इसकी शानदार और जीवंत रचनात्मक भूमिका रही है ।

हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत बंगाल से हुई और इसका श्रेय **राजा राम मोहन रॉय** को दिया जाता है। राजा राममोहन राय ने ही सबसे पहले प्रेस को सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा। भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किये और अपने पत्रों के जरिए जनता में जागरूकता पैदा की। राममोहन राय ने कई पत्र शुरू किये। जिसमें अहम हैं- **साल** 1816 में प्रकाशित '**बंगाल गजट**''। बंगाल गजट भारतीय भाषा का पहला समाचार पत्र है। इस समाचार पत्र के सम्पादक **गंगाधर भट्टाचार्य** थे। इसके अलावा राजा राममोहन राय ने **मिरातुल , सम्वाद कौमुदी , बंगाल हैराल्ड पत्र** भी निकाले और लोगों में चेतना । **30 मई 1826 को कलकत्ता से पण्डित जुगल किशोर** के संपादन में निकलने वाले '**उदन्त मार्तंड**' **को हिंदी का पहला समाचार पत्र** माना जाता है। इस पत्र के पहले ही अंक में स्पष्ट किया गया था कि यह "राजनीतिक और आर्थिक विषयों का साप्ताहिक है और इसका सम्बन्ध हर दल से है, मगर यह किसी दल के प्रभाव में नहीं आएगा।" 6 अपने सम्बन्ध में **हिकी ने लिखा था**, " मुझे अखबार छापने का विशेष चाव नहीं है, न मुझमें इसकी योग्यता है। कठिन परिश्रम करना मेरे स्वभाव में नही है, तब

भी मुझे अपने शरीर को कष्ट देना स्वीकार है ताकि मैं मन और आत्मा की स्वाधीनता प्राप्त कर सकूं।" 7 उदन्त मार्तण्ड में खड़ी बोली का 'मध्यदेशीय भाषा' के नाम से उल्लेख किया गया है। इसके प्रकाशन दिन को आधार मानकर 30 **मई** को '**राष्ट्रीय हिंदी पत्रकारिता दिवस**' मनाया जाता है।

इस पत्र ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रशासन और तत्कालीन अंग्रेजों के भृष्टाचार का जम कर पर्दाफाश किया । इस प्रक्रिया में उसने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्ज तक को नही बख्शा । उन दिनों समाचार पत्र सम्बन्धी कोई नियम नही थे, इसलिए मौका पाते ही वारेन हेस्टिंग्ज ने हिकी के इस पत्र का गला घोंट दिया और हिकी को गिरफ्तार करके जेल मे डाल दिया। हिकी के इस पत्र में पत्रकारिता की द्दष्टि से अनेक कमियां थी और लेखन भी अतिरेक भरा होता था; फिर भी भारत मे पत्रकारिता को जन्म देने का श्रेय हिकी को ही है। इस प्रकार भारत में पत्रकारिता के उदय के साथ दो तत्व मुख्य रुप से जुड़ गए : (1) सरकार एवं भृष्टाचार की आलोचना और (2) सरकार की ओर से उनका दमन ।

1821 में **राम मोहन रॉय** ने साप्ताहिक '**मिलातुल**' फिर '**बंगदूत**' छापना शुरू किया तो उन्होंने भी आजादी के भभके में नियंत्रणों के खिलाफ याचिका डाली। उनके समकालीन **जेम्स सिल्क** के अंग्रेजी अखबार '**कैलकट्टा जर्नल**'' ने ऐसी भंडाफोड़ पत्रकारिता की कि ईस्ट इंडिया कंपनी के गोरे शासकों ने 1857 आते-आते प्रेस पर कई नियंत्रण लगाए। बावजूद इसके अंग्रेजों की ही संगत से अभिव्यक्ति की आजादी में पत्रकारिता का शगल समाज में बनता-बढ़ता गया। तभी 1875 में '**स्टेट्समैन**' , 1838 में '**टाइम्स ऑफ इंडिया**' , 1865 में इलाहाबाद में '**पायनियर**',1881 में लाहौर में '**ट्रिब्यून**' , 1889 में मद्रास से दैनिक रूप में '**हिन्दू**' , 1923 में '**हिंदुस्तान टाइम्स**' अखबार शुरू हुए। अंग्रेजी की इस एलिट पत्रकारिता के बीच भारतीय भाषाओं में राममोहन राय से शुरू सिलसिला, 1860 में '**आनंद बाजार पत्रिका**', **भारतेंदु हरिश्चंद्र, लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी के** '**नेशनल कांग्रेस**', '**यंग इंडिया**' **व** '**हरिजन**' **सहित सैकड़ों पत्र-पत्रिकाओं** ने वह माहौल बनाया कि अभिव्यक्ति की आजादी और पत्रकारिता का आग्रह **एक्टिविस्टोंस्वतंत्रता** के ख्यालों में बतौर मशाल स्थापित था।

कलकत्ता से सन 1854 **ई०** में हिंदी का पहला दैनिक समाचार पत्र '**सुधावर्षण**' **श्यामसुंदर** के सम्पादकत्व में निकला । हिंदी का पहला सुसंगठित दैनिक पत्र '**भारत मित्र**' और पहली हास्य व्यंग्य प्रधान पत्रिका '**मतवाला**' थी।

स्वतन्त्रता से पूर्व प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं का कोई व्यवस्थित रिकॉर्ड सरकारी तौर पर उपलब्ध नही है। इनके प्रति तत्कालीन सरकार का रुख कुछ अनुकूलता का नही रहा। उदारतापूर्ण तटस्थ निरपेक्षता ही अनुकूलता मानी जा सकती थी, अन्यथा पत्रकारिता के हिस्से तो सरकारी दमन ही आया । अतः तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं का कहीं सुव्यवस्थित विवरण प्राप्त नहीं होता ।

आज़ादी के बाद हिंदी पत्रकारिता :

आज़ादी के बाद से पत्रकारिता के उत्कर्ष का नया दौर सामने आया। आज़ादी के पूर्व भारतीय पत्रकारिता एक मिशन के ध्येय से युक्त पत्रकारिता थी लेकिन आज़ादी के बाद भारतीय पत्रकारिता के पास वस्तुतः कोई निश्चित दिशा नही रह गई और वह व्यवसायिकता में बदल गई। स्वतन्त्रता के पश्चात औद्योगिक के विकास एवं नए भारत के निर्माण के साथ पत्रकारिता के स्वरूप में भी तेजी से बदलाव आया। मुद्रण तकनीक का अति विकसित रूप दिखाई दिया तो उसके साथ - साथ विशेषज्ञता का पक्ष भी सुदृढ़ होता गया।

भारत की स्वाधीनता के साथ उसके संविधान में विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मौलिक अधिकार के रूप में मिली। अतः स्वाधीन भारत में पत्रों का विकास द्रुत गति से हुआ। भारतीय प्रेस का दायित्व भी बना कि वह देश के आर्थिक सामाजिक विकास में जन- जन की भागीदारी को प्रोत्साहित करे ही साथ में जनतंत्र की सफलता के लिए जनमत निर्माण में सक्रिय भूमिका का निर्वहन भी करे। ग्रामीण भारत के सामने पिछड़े वर्गों में जागरूकता, साक्षरता का प्रचार- प्रसार , शोषण से मुक्ति , छुआछूत व जाति प्रथा, अंधविश्वास आदि अनेक चुनौतियाँ थी। इन विषयों का सरोकार सीधे पत्रकारिता से था। पत्र - पत्रिकाओं ने राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को आत्मसात किया। अब आंदोलनात्मक प्रचार के बजाय सन्तुलित , निष्पक्ष, तथ्यात्मक विवरण पर अधिक जोर देंने की आवश्यकता महसूस की गई। यद्यपि राष्ट्रभाषा हिंदी होने के कारण हिंदी के पत्रों के तीव्र गति के विकास की अपेक्षा की गई तथापि राज-नेताओं के अंग्रेजी- मोह तथा हिंदी- समर्थको की शिथिलता के कारण हिंदी के पत्र अंग्रेजी के पत्रों को मात न दे सके फिर भी हिंदी के पत्रों में एक वेगमय स्फूर्ति आई। स्वतन्त्रता के साथ ही कई हिंदी दैनिकों ने जन्म लिया।

कुछ अंग्रेजी समाचार पत्रों ने हिंदी दैनिक पत्र निकाले। **लखनऊ में ' पायोनियर' से 'स्वतन्त्र भारत'** , **'नेशनल हेराल्ड' से 'नवजीवन'** , **इंडियन एक्सप्रेस से 'जनसत्ता'** आदि नामक पत्र निकले इनके

अलावा **'अमर उजाला'** (आगरा, बरेली) , **'नवभारत'** (नागपुर) , **'नई दुनिया'** (इंदौर) और **' दैनिक** (चंडीगढ़) आदि पत्रो का प्रकाशन हुआ।

- विविध विषयक पत्रकारिता का विकास:- विज्ञान प्रौद्योगिकी , फ़िल्म, चिकित्सा, स्वास्थ्य, कृषि आदि।
- साहित्यिक पत्रकारिता हिंदी पाठकों में विशेष लोकप्रिय (धर्मयुग, दिनमान, कादम्बिनी आदि।)
- तकनीकी पहलुओं पर ध्यान:- प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता दोनों में नई मुद्रण प्रणाली , आधुनिक उपकरणों और तकनीकी साधनों का उपयोग बढ़ा।
- विषय वस्तु को गौण रखा गया और बाहरी साज-सज्जा की ओर अधिक ध्यान दिया गया।
- नव- प्रयास , नव- निर्माण और महती आकांक्षाओ का उन्मेष हुआ।
- औद्योगिक विकास के साथ-साथ मुद्रण कला का भी विकास हुआ और नए अखबारों को नया E मिला। समयबद्धता और काम करने के निश्चित तौर तरीके विकसित हुए । पत्रकारिता जीवन के ब्रहत्तर मूल्यों के विकास, प्रसार और स्थापना का कारक बनने लगी।
- 21वीं शताब्दी सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। आधुनिक संचार तकनीकी का मूल आधार इन्टरनेट है। कलमविहीन पत्रकारिता के इस युग में इन्टरनेट पत्रकारिता ने एक नए युग का सूत्रपात किया है। वेब पत्रकारिता को हम इन्टरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता के नाम के जानते है। यह कम्प्यूटर और इंटरनेट द्वारा संचालित एक ऐसी पत्रकारिता है, जिसकी पहुँच किसी एक पाठक, एक गाँव, एक प्रखण्ड, एक प्रदेश, एक देश तक नहीं अपितु समूचे विश्व तक है।

उपसंहार :

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि भारत के स्वाधीनता संघर्ष में पत्र-पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। प्रारम्भ से ही हिंदी पत्रकारिता अपने ऊँचे आदर्शों का पालन करती आ रही है । सदा से ही राष्ट्रीयता उसका मुख्य स्वर रहा है और स्वरूप सार्वदेशिक । राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिये पत्रकारों ने अनेक कष्ट और यातनाएँ सही पर वे अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए भारतीय पत्रकारों ने पत्रकारिता का मानदण्ड सदैव ऊँचा बनाए रखा है।

पत्रकारिता आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि है। पत्र पत्रिकाओं ने राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को आत्मसात किया । मुद्रण तकनीक का अति विकसित रूप दिखाई दिया उसके साथ साथ

विशेषज्ञता का पक्ष भी सुद्दढ़ होता गया । पत्र – पत्रिकाएँ युगीन चेतना को प्रतिबिंबित करने में बहुत हद तक सफल रही है जन मानस के विचार मंथन को उनमें पर्याप्त अभिव्यक्ति मिल पाती है । कुल मिलाकर स्वाधीनता के बाद हिंदी पत्रकारिता का बहुमुखी विकास हुआ है । आज आवश्यकता इस बात की है कि इसमें और गाम्भीर्य आये तथा छोटे पत्र पत्रिकाओं का आर्थिक आधार सशक्त हो ताकि इनमें संपादक के विचार– स्वातन्त्र्य अधिक संभव हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ दशरथी बेहेरा – पत्रकारिता , नवभारत प्रेस, ओडिशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय सम्बलपुर, मई - 2017
2. प्रयोजन मूलक हिंदी की नई भूमिका , संस्करण-2007, दरबारी बिल्डिंग , महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित।
3. कृष्ण बिहारी मिश्र- हिंदी पत्रकारिता , पृष्ठ 70, सन 2000 ई०
4. डॉ रामचन्द्र तिवारी-पत्रिका संपादन कला , पृष्ठ 58
5. भानावत डॉ संजीव- पत्रकारिता का इतिहास
6. हिंदी विकिपीडिया- **http://hi.m.wikipedia.org>wiki**
7. M.bharatdiscovery.org
8. Hi hindi.com
9. My voiceopindia.com
10. Journalist café.com